should know the public mind. If Government will not have any seriousness they will have to repent in the long run. At least the Bill can be circulated for the public opinion.

श्री जगन्नाथ राव : मुझे यह भी स्वीकार नहीं कि विधेयक जनमत जानने के लिये परिचालित किया जाय ।

विधेयक सभा की अनुमति से वापिस लिया गया ।/*The bill was, by leave, withdrwn*

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए
MR. SPEAKER *in the Chair*]

कुछ माननीय सदस्य : प्रधान मंत्री के वक्तव्य के रूप सदन कुछ मिनिटों के लिए स्थगित किया जाय ।

Mr. Speaker : I adjourn the House for ten minutes. We will meet after ten minutes.

इसके पश्चात् लोक-सभा 4 बज कर 22 मिनिट तक के लिये स्थगित हुई ।

The Lok Sabha then adjourned till Twenty-two Minutes past Sixteen of the Clock.

लोक-सभा 4 बज कर 22 मिनिट पर पुनः समवेत हुई ।

The Lok Sabha reassembled at Twenty-two minutes past Sixteen of the Clock.

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए
MR. SPEAKER *in the Chair*]

भारत पाकिस्तान सम्बन्धों के बारे में वक्तव्य

STATEMENT RE: INDO-PAKISTAN RELATIONS

प्रधान मंत्री तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री) : मैंने 24 सितम्बर, 1965 को इस सदन में जो वक्तव्य दिया था उसमें मैंने 23 सितम्बर 1965 को 3.30 पर हुए युद्ध विराम के बारे में सभी तथ्य बताये थे । मैं उसके बारे में अधिक विस्तार से कुछ नहीं कहना चाहता । अखबारों में सब बातें आ गयी हैं । मैं केवल उन बातों को सदन के समक्ष रखूंगा जिनको अभी हल नहीं किया गया है ।

युद्ध विराम अभी तक प्रभाव शाली नहीं सिद्ध हो सका । अभी पूरी तरह लागू नहीं हुआ । इसका मुख्य कारण यह है कि पाकिस्तानी सेनायें लगातार उन चौकियों तथा क्षेत्रों पर कब्जा करने का प्रयास कर रही है जिन पर युद्ध विराम होने के समय उनका कब्जा नहीं था । पाकिस्तान के इन आक्रमणों के कारण उन क्षेत्रों में, जिनमें हमारी सेनायें पाकिस्तानी सेनाओं का सामना कर रही है अशान्ति की स्थिति में है । युद्ध विराम लागू होने के बाद हमारे जिस राज्य क्षेत्र पर धोखे से कब्जा किया गया है उसे हमारी सेना ले लेगी । युद्धविराम इसमें कोई बाधा नहीं बनेगा । उल्लंघन होने पर हमारे लिए इसके अतिरिक्त अन्य कोई और ढंग हीं नहीं, जिसे अपनाया जा सकता है । इसी प्रकार से ही हम स्थिति का सामना कर सकते है । ऐसा करके ही पाकिस्तानी इरादों को नाकारा बनाया जा सकता है । इस प्रकार की हमारी प्रतिक्षात्मक कार्यवाही को युद्ध विराम का उल्लंघन नहीं कहा जा सकता ।

[श्री लाल बहादुर शास्त्री]

वैसे हम सुरक्षा परिषद का ध्यान नियमित रूप से पाकिस्तान द्वारा युद्धविराम उल्लंघनों की ओर दिला रहे हैं। इस प्रकार के उल्लंघनों की कुल संख्या लगभग एक हजार है। जब तक कि युद्ध विराम प्रभावी रूप से लागू न हो सशस्त्र सेनाओं को वापस बुलाना सम्भव नहीं हो सकेगा। इस दिशा में सब से अधिक महत्व की बात यह है कि हमें किस तरह यह विश्वास दिलाया जायेगा कि पाकिस्तान 5 अगस्त 1965 वाले घुसपैठ करने के ढंगों को नहीं अपनायेगा। हमें इस बात पर भी जोर देना होगा, क्योंकि हमें सूचना मिल रही है कि पाकिस्तानी अधिकृत कश्मीर में तथा आदिम जाति क्षेत्रों में और घुसपैठ करने का जोर शोर से तैयारी हो रही है। हम यह भी आशा करते हैं कि सुरक्षा परिषद तुरन्त ही पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में और घुसपैठ करने की तैयारी सम्बन्धी जांच करें।

मैं इस समय यह कहे बिना नहीं रह सकता कि संसार बड़े संकट से बच सकता है यदि किसी स्थान पर कोई आक्रमण नहीं हो। यह बात घोषित करने के लिये निष्कर्ष प्रमाण किया जाना चाहिए कि आक्रान्ता कौन है। हाल के संघर्ष में कोई भी व्यक्ति स्पष्ट रूप से यह देख सकता है कि आक्रमण पाकिस्तान ने किया है। राष्ट्रीय संघ के मुख्य पर्यवेक्षक ने यह निर्णय निष्पक्ष रूप से दे दिया है सुरक्षा परिषद ने भी स्वयं इस बात को स्वीकार किया है कि उस दिन भारत की ओर से कोई कार्यवाही नहीं की गयी। पाकिस्तान ने भारी संख्या में घुसपैठिये भेजने आरम्भ कर दिये थे और स्पष्ट है कि उसने आक्रमण किया है। अतः मेरा कहना यह है कि इस दिशा में एक स्पष्ट निर्णय दिये जाने की आवश्यकता है। जिस संगठन पर संसार भर में शान्ति बनाये रखने का उत्तरदायित्व है, उसे इस मामले पर स्पष्ट और निष्पक्ष निर्णय देने के लिये सदैव रहना चाहिए। स्थिति यह है कि पाकिस्तान न तो युद्ध विराम ही चाहता है और न ही वह कार्यवाही ही करना चाहता है जो कि सुरक्षा परिषद युद्ध विराम के बाद उससे करने की अपेक्षा करती है। जिसे कि उसने अपने प्रस्ताव में निर्धारित किया है। मतलब यह कि सभी सशस्त्र सैनिकों को जिनमें घुसपैठ करने वाले भी शामिल है तुरन्त वापिस बुलाये जाय।

पाकिस्तान ने युद्ध विराम बड़े दुःख से संकोच करते हुए स्वीकार किया है। परन्तु यदि पाकिस्तान इस वर्तमान तनावपूर्ण स्थिति को समाप्त करना चाहता है तो उसे युद्ध विराम समझौते का आदर करना चाहिए। उसे दिन प्रतिदिन युद्ध विराम का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। उसे तुरन्त हमारे क्षेत्र से अपनी सशस्त्र सेनाओं को वापिस बुला लेना चाहिए, जहाँ कि अब पाकिस्तान ने अपना अवैध कब्जा कर रखा है। तो हम भी अपनी सेनाओं को वापिस बुला लेंगे। परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात एक ओर है, वह यह कि पाकिस्तान अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए दोबारा जो तैयारी कर रहा है, उसे भी समाप्त कर दिया जाना चाहिए पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में अतिरिक्त भर्ती नहीं करनी चाहिए। पाकिस्तान को अस्त्र-शस्त्रों को प्राप्त करने के प्रयास भी छोड़ देने चाहिए। जो माल और जहाज उसने अवैध रूप से कब्जे में किये है उसे मुक्त कर देने चाहिए। वह चीन के साथ जो अपने कपट सम्बन्ध स्थापित किए है उसे भी छोड़ देना चाहिए। चीन के साथ उसके समझौतों का आधार सामान्य भारत दुश्मनी है। पाकिस्तान को पहले सामान्य सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए। ऐसा करने के बाद ही हम आपस में अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने के लिए बात चीत कर सकते हैं।

एक बार पाकिस्तान ईमानदारी से शान्ति का रास्ता अपनायें, तो भारत के लोग और भारत सरकार पूरी तरह उसका सम्मान करेगी। परन्तु खेद की बात यह है कि पाकिस्तान के इरादों के बारे में जितने भी सबूत हमारे पास है, उससे यह ही लगता है कि उसके इरादों में कोई तबदीली नहीं आई है। वह शान्ति के मुकाबले में युद्ध को प्राथमिकता देता है। ऐसी परिस्थिति में हमें दो दृष्टियों से मामले पर विचार करना होगा। एक तो हमें यह सोचना होगा कि हमें निरन्तर सावधान रहना होगा। हमें अपने अन्दर घृणा की भावना नहीं बढ़ानी और नहीं हमें अपनी मूलभूत नीति को ही छोड़ना है। हमें धर्मनिरपेक्षता भी कायम रखनी है, आर्थिक विकास को ढीला नहीं करना और अपने राज्य क्षेत्र के किसी भाग पर धमकी का

मुकाबला करने के लिए भी तत्पर रहा है। पाकिस्तान के साथ अपने सम्बन्धों को हम एक सभ्य समाज द्वारा निर्धारित सिद्धान्तों के अनुसार बनाना चाहते है। पाकिस्तान ने संधियों के बल पर पाकिस्तान ने हमारे उच्च आयोग की तलाशी लेकर सारे कूटनीतिक शिष्टाचारों को तोड़ा है। हमने बदले की कोई कार्यवाही नहीं की। केवल इतना ही किया कि हमने अपने उच्च-आयुक्त को वापिस बुला लिया है और निकट भविष्य में हमारा उसे वहाँ वापिस भेजने का कोई इरादा नहीं है।

भुगतान करने के बारे में काफी कहा सुनी हुई है सभा सिन्ध जल सन्धि के अन्तर्गत हमारे द्वारा देय राशि के भुगतान के प्रश्न पर चर्चा करने वाली है। हम उन वचन बंधनों से पीछे नहीं हटना चाहते हैं जोकि हमने सत्यनिष्ठा से किये हैं चाहे उनका सम्बन्ध सिन्धु जल सन्धि से है अथवा कच्छ सम्बन्धी समझौते से। जबकि हम ताकत का मुकाबला ताकत से करने के लिये सदा तैयार है, हम अपने वचनों का बराबर पालन करते रहेंगे। हम इस बात के लिये पूर्णरूपेण सजग हैं कि पाकिस्तान तथा इसका मित्र चीन मिलकर किसी ऐसे समय, जो वह उपयुक्त समझेंगे हमारे विरूद्ध कार्यवाही करने का निर्णय कर सकते हैं, अतः हमें किसी भी खतरे का मुकाबला करने के लिये हमेशा सतर्क रहना है। हम अपने प्रतिरक्षात्मक प्रयत्न से यथा-सम्भव अत्यधिक हद तक और यथा सम्भव बहुत ही थोड़े समय में आत्म-निर्भरता प्राप्त करना चाहते हैं।

प्रतिरक्षा मंत्रालय में प्रतिरक्षा सम्भरण विभाग इस मुख्य उद्देश्य से खोला गया है ताकि देश में उन मदों की उत्पादन क्षमता स्थापित की जा सके जो हमारी प्रतिरक्षा के लिये आवश्यक हैं और जिनके लिये हमें आयातों पर निर्भर रहना पड़ता है। हमने नये प्रतिरक्षा ऋणों तथा राष्ट्रीय प्रतिरक्षा स्वर्ण बांड योजना पर पर्याप्त रूप से विचार कर लिया है जिनको अब लागू कर दिया गया है और तथा हमने व्यवहारिक दृष्टिकोण को अपनाने का प्रयत्न किया है और वह समस्त प्रोत्साहन दिया गया जोकि दिया जा सकता था। इन योजनाओं से राष्ट्र की प्रतिरक्षा सम्बन्धी प्रयत्नों में महत्वपूर्ण योग मिलेगा। आशा है कि लोग इन योजनाओं को अपना उचित योगदान देंगे।

हम पाकिस्तान के साथ शान्ति से रहना चाहते हैं। हमने शान्ति के रास्ते को छोड़ने के लिये न पहले कभी कोई पहल की है और न ही भविष्य में हम ऐसा करेंगे। हम पाकिस्तान के किसी राज्य-क्षेत्र को अपने देश में नहीं मिलाना चाहते हैं। परन्तु शान्ति की पुनः स्थापित तथा भविष्य में इसका परिरक्षण तभी किया जा सकता है जब पाकिस्तान अकारण आक्रमण करने के तूफानी रास्ते को छोड़ नहीं देता है। हम किसी आक्रांता की आराधना नहीं कर सकते हैं। चूंकि पुनः आक्रमण का खतरा अभी भी बना हुआ है अतः हमें सदा सजग और तैयार रहना चाहिये।

सारी स्थिति को देखते हुए यह कहना ही पड़ता है कि अगस्त में जो कुछ हुआ वह पुनः भी हो सकता है। हमें हालात का मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें जागरूक रहना होगा। हमारी सशस्त्र सेनाओं का नैतिक बल पूरी तरह कायम है। उन्होंने अपने साथियों को मातृभूमि के लिए मरते अपनी आखों से देखा है। मैंने उन्हें बताया कि देश आपका बहुत आभारी है। देश के लोग इस खतरे का मुकाबला करने को तत्पर है। मुझे पता है कि देश भी और यह सदन भी राष्ट्र के किसी भी खतरे का मुकाबला करने के लिए प्रत्येक सम्भव बलिदान देने को तत्पर है।

श्री रंगा : (वित्तूर) : अध्यक्ष महोदय, मेरा सौभाग्य है कि एक बार फिर मैं और मेरा दल प्रजा तंत्रों द्वारा आज के वक्तव्य में उल्लिखित रवैये के लिये उनका समर्थन करता हूं।

सुरक्षा परिषद में पाकिस्तानी प्रतिनिधि द्वारा जिस भाषा का प्रयोग किया गया है उससे हमारा मन क्षोभ से भर गया है और आश्चर्य तो इस बात का है कि वहां किसी ने भी इस